18/04/2020 संस्कृत कक्षा - सातवीं

प्रथमः पाठः सुभाषितानि

(3) दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा।

सरलार्थ

दान, तपस्या, वीरता, विज्ञान, विनय और नीति में कभी आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि पृथ्वी बहुत प्रकार के रत्नों से भरी है।

(4) सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम्
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।

सरलार्थ

सज्जनों के साथ ही बैठना चाहिए, सज्जनों के साथ संगति करनी चाहिए, सज्जनों के साथ ही विवाद (झगड़ा) और मित्रता करनी चाहिए, असज्जनों के साथ तो कोई भी व्यवहार नहीं करना चाहिए

(5) धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

सरलार्थ

धन और अन्न के प्रयोग में, विद्या ग्रहण करने में, भोजन और आपसी व्यवहार में जो संकोच को ~~त्याग~~ त्याग देता है वही सुखी है।

Write in H/C